भगवद्–दर्शन हेतु दृढ़ इच्छा अतिआवश्यक है

एक पवित्र हृदय वाला बालक भगवान के भक्त के पास पहुँचा और उसने भक्त से कहाः "कृपया मुझे भगवान के दर्शन पाने में सहायता करें, मैं आपको अपना गुरु मानता हूँ।" वह भक्त बहुत पहुँचा हुआ नहीं था, इसलिये उसने बहुत सच्चाई से कहाः "भगवान सब जगह है, परंतु उसको पाना बहुत कठिन है।" इस उत्तर से वह बालक संतुष्ट नहीं हुआ। इसलिये उसने पुनः अपने गुरु से कहाः "नहीं, मुझे विश्वास है कि भगवान के दर्शन पाने में आप मेरी सहायता कर सकते हैं। आप मुझे कोई भी रास्ता बतलाइये जिससे कि मैं भगवान के दर्शन करने में सफल हो सकूँ।" इसपर उस भक्त ने कहाः "भगवान मथुरा–वृंदावन में रहते हैं और तुम्हें वहाँ पर ही उनके दर्शन प्राप्त हो सकते हैं।"

बालक इस सलाह को मानता हुआ मथुरा–वृंदावन की ओर चल पड़ा। लगातार दो दिनों तक वह बालक मथुरा–वृंदावन की गली–गली में भगवान की खोज में लगा रहा। उसने हर–एक व्यक्ति से भगवान के बारे में पूछताछ की, और उन सभी व्यक्तियों से उस बालक को तरह–तरह के उत्तर मिले। किसी ने कहाः "कि अवश्य एक समय था जब भगवान यहाँ रहा करते थे, परंतु अब या तो वह लोगों के हृदय में रहते हैं या अपने लोक में रहते हैं।" एक अन्य ने कहाः "वह व्यक्ति ठीक ही कह रहा है, परंतु प्रयास करने से भगवान को यहाँ पर भी पाया जा सकता है।"

वह बालक भगवान की खोज में इधर–उधर घूमता रहा। परंतु किसी से भी उसे संतोष–जनक उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। साथ ही वह यह भी सोचता रहा कि गुरूजी गलत सलाह नहीं दे सकते। यदि उन्होंने कहा है कि भगवान मथुरा–वृंदावन में हैं, तब अवश्य ही उन्हें यहाँ होना चाहिये। मुझे जंगल आदि में भी उनकी खोज करनी चाहिये।

इस प्रकार सोचते हुए वह बालक जंगल में जा पहुँचा। परंतु वहाँ भी भगवान को न पाकर वह जंगल में ही तपस्या में लीन होकर बैठ गया। उसने भगवान को प्राप्त किये बिना वहाँ से न उठने का निश्चय किया। उसने कुछ खाया–पीया भी नहीं। तीन दिन इसी प्रकार निकल गये। तीसरे दिन एक अन्य बालक उसके पास कटोरे में दूध लेकर आया और उससे दूध पीने का आग्रह करने लगा। तब बालक ने नवागंतुक से कहाः "मैं तो भगवान के हाथों से ही खाऊँगा–पीयूँगा, अन्य किसी से भी नहीं।" नवागंतुक के बारंबार आग्रह करने पर भी जब वह बालक उसके हाथ से कुछ भी खाने–पीने को तैयार नहीं हुआ तब अंत में नवागंतुक ने कहाः "मैं ही भगवान हूँ।"

बालक इस प्रकार के वचन सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। परंतु अगले ही क्षण उसने नवागंतुक से कहाः "मैं कैसे मानूँ कि आप ही भगवान हैं? जब मेरे गुरू मानेंगे कि आप भगवान हैं तभी मै मानूँगा कि आप ही भगवान हें। इसलिये आप मेरे साथ मेरे गुरू के पास चलिये।"

नवागंतुक ने कहाः "मैं तुम्हारे साथ चलूँगा, परंतु दूध तो पी लो।" तब उस बालक ने नवागंतुक के हाथ को पकड़े रहकर दूध पी लिया। तत्पश्चात् उस बालक ने नवागंतुक के हाथ को कसकर अपने हाथ में पकड़कर अपने गुरू के निवास की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर वह बालक जोर से चिल्लाया "गुरूजी मैं भगवान को अपने साथ लाया हूँ। कृपया आप देखिये और बतलाइये कि यही भगवान हैं अथवा नहीं।"

गुरूजी उठे और नीचे देखकर बोलेः "अवश्य यही भगवान हैं, परंतु तुमने उनका हाथ इतने कसकर क्यों पकड़ा हुआ है।" इस प्रकार यदि किसी व्यक्ति की इच्छा दृढ़ हो तो उसके लिये कुछ भी पाना असंभव नहीं है।

बोलो सच्चिदानंद सनातन ब्रह्म की जय